eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

'पत्रकारिता' अर्थ, परिभाषा एवं अवधारणा : एक अध्ययन

[1]डॉ0 शार्दूल विक्रम सिंह

[1] एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी0जी0 कॉलेज, बाराबंकी (उ0प्र0)

Received: 01 Jan 2018, Accepted: 15 Jan 2018 ; Published on line: 31 Jan 2018

Abstract

मनुष्य स्वयं को अभिव्यक्त करना चाहता है। आत्माभिव्यक्ति से उसे आनन्द प्राप्त होता है। समाज में रहते हुए वह इसके सुख–दुख, आशा–निराशा, राग–द्वेष, कष्ट–कठिनाईयों को देखता और अनुभव करता है। भोगे हुए यथार्थ को वह दूसरे लोगों को भी बताना चाहता है। इस कार्य के लिए वह अपनी लेखनी को उठाता है। लोक मानस की अभिव्यक्ति की जीवंत विद्या ही पत्रकारिता है जिसके द्वारा सत्य को मुखरित किया जाता है। नागरिकों को समय और समाज के प्रति सजग रहकर दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं।

Key words :- पत्रकारिता' अर्थ, परिभाषा, अवधारणा, आत्माभिव्यक्ति।

Introduction

कभी समय था जब ज्ञान विज्ञान केवल कुछ ही लोगों तक सीमित था। जनसामान्य का ज्ञान की ऊँची–ऊँची बातों से कोई सम्बन्ध न था। शिक्षा के व्यापक प्रसार और पत्रकारिता के उदय ने उस एकाधिकार को तोड़ दिया। आधुनिक युग में सूचना तथा संचार (Information and Technology) का विशेष महत्त्व स्वीकारा गया है। यद्यपि प्राचीन काल में भी सूचनाओं का महत्व था परन्तु आधुनिक युग को तो सूचना व संचार का युग माना गया है। संचार तंत्र के निरन्तर बढ़ते जा रहे महत्त्व ने सम्पूर्ण समाज को अपने ओर आकर्षित किया है। डाक व्यवस्था, दूरभाष, रेडियो, टेलिविज़न,कम्प्यूटर, संचार उपग्रह आदि सूचना एवं संचारतंत्र के आधुनिकतम साधन है जो प्राचीनकालीन विभिन्न माध्यमों की निरन्तर विकसित परंपरा का ही परिणाम है। अंग्रेजी भाषा में पत्रकारिता के लिए जर्नलिज़्म शब्द का प्रयोग किया जाता है। जो 'जर्नल' शब्द से व्युत्पन्न है। इस शब्द का तात्पर्य दैनिक है। पहले दिन भर के कार्यकलापों और गतिविधियों का विवरण 'जर्नल' में रहता था इसलिए इस शब्द से जर्नलिज़्म' बना लिया गया। आंग्ल भाषा में पत्रकारिता के लिए 'जर्नलिज़्म' शब्द का प्रयोग किया

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

जाता है। डॉ0 मूलर ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ ''मार्डन जर्नलिज़्म'' में पत्रकारिता की अवधारणा स्पष्ट करते हुए लिखा है कि 'फ्रेंच' शब्द 'जर्नी' से जर्नलिज़्म' शब्द की व्युत्पत्ति हुई है, जिसका अर्थ एक–एक दिवस का कार्य या उसकी विवरणिका प्रस्तुत करना है। उन्होने पत्रकारिता को दैनिक जीवन की घटनाओं और उनके आधार पर प्रकाशित पत्रों की संवाहिका माना है, और इसमें घटनाओं, तथ्यों व्यवस्थापरकता के साथ–साथ राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और कलात्मक संदर्भों की प्रस्तुति स्वीकार की है।

आधुनिक युग में समाज के विभिन्न वर्गों, समुदायों को एक दूसरे के साथ जोड़ने का कार्य अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका के साथ पत्रकारिता द्वारा किया जा रहा है। राजनीति के महान आचार्य 'चाणक्य' ने अपने ग्रन्थ ''कौटिल्य अर्थशास्त्र'' में पत्र का उल्लेख विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के संदर्भ में किया है। उनके अनुसार निंदा, प्रशंसा, इच्छा आख्यात अर्चना प्रत्याख्यान, उपालम्भ प्रतिषेध, प्रेरणा, सांत्वना, अभ्यवपत्ति, भर्त्सना तथा अनुनय इन तेरह बातों में पत्र से प्रकट होने वाले अर्थ लक्षित होते हैं। अतः कहा जा सकता है कि जन–संवेदना के संचार का सर्वसुलभ प्रभावकारी जन माध्यम ही पत्रकारिता है। लोकतांत्रिक प्रशासन का एक अविभाज्य अंग पत्रकारिता है। लॉर्डस, पादरी तथा कॉमन्स ये लोकतन्त्र के महत्वपूर्ण अवयव है। प्रेस तो निरन्तर गतिमान संसद है। संसद और प्रेस ही लोकप्रिय सरकारों के मुख्य अंग हैं। आज समाज में जहाँ भी गड़बड़ी, विद्रपता, अस्वाभाविकता और विच्युति जैसी स्थिति है वहाँ पर पत्रकारिता शोधन–कार्य में लगी हुई है। मुद्रित पन्ने जनता के लिए अधिक विश्वसनीय होते हैं। लोगों में आज सूचनाओं की भूख तेज हो गई है। पत्रकारिता तो कुछ महत्वपूर्ण चेतना उद्योग है। ''मार्क्स ने पत्रकारिता को सर्वहारा वर्ग का ही माना है। उनके अनुसार जनता को सोचना चाहिए कि पूँजीवादी विचारधारा के केन्द्र से उसे शब्दों द्वारा किस तरह छला जा रहा है।''

परिभाषा– यदि कौटिल्य के इस 'पत्र' सम्बन्धी अवधारणा पर गहन दृष्टि से विचार किया जाए तो पत्र लेखन कला की सूक्ष्मता तथा उसकी बहुआयामी उपयोगिता उद्घटित होती है। इस परिभाषा को आधार बनाकर पत्र–लेखन कला को पत्रकारिता की संज्ञा प्रदान की जा सकती है। पत्र पत्रिकाएं समाज का दर्पण होती है। समाज में जो घटित हुआ अथवा जो घटित होगा– उन सबका वर्णन–विवरण पत्र पत्रिकिओं में किसी रूप में अवश्य होता है। अध्ययन–विश्लेषण द्वारा पत्रकारिता की संज्ञा व स्वरूप पर विचार किया जा रहा है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

''पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है। इसका कार्य जनता तथा जन–नेताओं के समक्ष लोक–कल्याण सम्बन्धी कार्यों की सूची प्रस्तुत करना है।'' सर्वप्रथम भारतीय विद्वानों के पत्रकारिता विषयक विचार प्रस्तुत हैं–

सी0जी0 मूलर– ''सामयिक ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। इसमें तथ्यों की प्राप्ति, उनका मूल्यांकन और समुचित प्रस्तुतीकरण होता है।''

महादेवी वर्मा– ''पत्रकारिता एक रचनाशील विद्या है। इसके बगैर समाज को बदलना असम्भव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कत्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए, क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाएगा।''

महात्मा गाँधी– ''पत्रकारिता का एक उद्देश्य जनता की इच्छाओं विचारों का समझना और उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जाग्रत करना और तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।''

डॉ0 कृष्णबिहारी मिश्र– ''पत्रकारिता वह विद्या है जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्त्तव्यों और उद्देश्यों का विवेचन किया गया है। जो अपने युग और संबंध में लिखा जाए वही पत्रकारिता है।''

डॉ0 प्रकाश चन्द्र भुवालपरी– ''पत्रकार समय और समाज के संदर्भ में प्रबुद्ध रहकर जो दायित्व बोध कराता है, समाज कल्याण के लिए उसका समयोचित प्रकाशन ही पत्रकारिता है।''

डॉ0 प्रेमनाथ चतुर्वेदी– ''पत्रकारिता विशिष्ट देशकाल, परिस्थितिगत तथ्यों का अमूर्त, परोक्ष मूल्यों के सदर्भ और आलेख उपस्थित करती है।''

इस प्रकार पत्रकारिता से सम्बद्ध विद्वानों ने पत्रकारिता के स्वरूप को परिभाषित करने का प्रयास किया है, परन्तु विचार भय के कारण सभी परिभाषाओं का उल्लेख संभव नहीं है। उपर्युक्त सभी परिभाषाओं में समाज और समय के संदर्भ में सजगता और सामाजिकों में दायित्व बोध कराने की बात पर अधिक बल दिया गया है। अतः पौराणिक ग्रन्थ 'गीता' में इसी बात को स्थान–स्थान पर 'शुभ दृष्टि' के प्रयोग से कहा गया है। यह शुभ दृष्टि ही पत्रकारिता है जिसमें मंगलकारी तत्वों को प्रकाशित करना आता है। 'आचार्य खडिलकर' ने इस सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए कहा है– ''ज्ञान और विचार शब्दों एवं चित्रों के रूप में दूसरे तक पहुँचाना ही पत्रकला है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

ऐसे कई पाश्चात्य विचारक भी हुए हैं जिन्होंने पत्रकारिता सम्बन्धी अपने विचार प्रस्तुत किये हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं–

चैम्बर्स डिक्शनरी– ''पत्रकारिता सार्वजनिक पत्रों को चलाने व उनके लिए किये जाने वाले लेखन कार्य का नाम है।''

''Journalism: The profession of conducting or writing for public journals."

श्री रोलेण्ड वोलॉस्की– ''पत्रकारिता आधुनिक जनसंचार माध्यमों के द्वारा सार्वजनिक मत तथा सार्वजनिक सूचना तथा सार्वजनिक मनांरंजन के एक व्यवस्थित एवं विश्वसनीय तंत्र का नाम है।''

"Journalism is the systematic and raliable dissemination of public information, public opinion and public entertainment by modern mass media of communication."

श्री जी0एफ0 नॉट– ''प्रेस वर्तमान विश्व (युग) में एक सम्पूर्ण संस्था है जिसके द्वारा व्यवसायिक रूप से पत्रकारिता की अवधारणा के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के संचार माध्यम प्रयोग मे लाये जाते हैं।''

"The press is a full-fledged institution in our modern world and the various media utilised by the press and generally called by and now professionally united under the common name of Journalism".

पत्रकारिता की विभिन्न परिभाषाओं के विश्लेषण द्वारा यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पत्रकारिता जनसूचना तथा जनसंचार का माध्यम है जो समाज के विभिन्न वर्गों तथा क्षेत्र में पारस्परिक सूचना, संप्रेषण तथा संपर्क स्थापित करने का कार्य विभिन्न माध्यमों के द्वारा करती है – पोस्टर, विज्ञापन, शिलालेख, पत्र, पत्रिका, रेडियो, टेलिविज़न, वीडियो, कम्प्यूटर आदि इसके प्राचीन आधुनिक माध्यम है। यहाँ यह तथ्य भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि पत्रकारिता की अवधारणा केवल दैनिक पत्रों तक ही सीमित नहीं है अपितु रेडियो, टेलीविज़न, स्मारिकाए, वीडियो आदि भी पत्रकारिता के अनिवार्य अंग हैं।

"The most people 'The Press' means the daily newspaper, but although pre-emment in influence and importance daily newspaper are numerically but a small part at the press."

अवधारणा– वास्तव में पत्रकारिता एक व्यापक अवधारणा है और केवल दैनिक पत्रों के प्रकाशन–संपादन तक ही इसे सीमित मानना सही नहीं होगा। अन्य संचार माध्यमों के प्रयोग द्वारा

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

किया जाने वाला सूचना संप्रेषण कार्य भी पत्रकारिता के क्षेत्र में सम्मिलित किया जाना चाहिए। अतः पत्रकारिता सभी प्रकार के संचार–माध्यमों के द्वारा जनसूचना, जनसंपर्क तथा जनमत निर्माण की सुव्यवस्था है।

संचार माध्यमों के अतिरिक्त पत्रकारिता के अन्य महत्वपूर्ण अंग इन संचार माध्यमों के प्रयोगकर्त्ता हैं जिन्हें पत्रकार कहा जाता है। प्रकाशक, संपादक, संवाददाता आदि विभिन्न लोग पत्रकार कहलाते हैं। अनेक विद्वानों ने पत्रकारिता को पत्रकारों के कार्यों तथा दायित्वों को निर्धारित करने वाली व्यवस्था भी कहा है। पत्रकार ही वह महत्वपूर्ण अंग है जिसके द्वारा अमूर्त पत्रकारिता मूर्तता ग्रहण करके 'सैद्धान्तिक आकाश' से 'व्यवहारिक धरातल' पर अवतरित होती है। पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न व्यक्ति अपने भिन्न–भिन्न कार्यों से जनसूचना, जनसंपर्क तथा जनमत निर्माण में अपनी पृथक्–पृथक् भूमिकाएं निभाते हैं।

पत्रकारिता को जनसंचार, जनसंपर्क, तथा जनमत निर्माण का माध्यम मानने के साथ उसके स्वरूप के विषय में प्रायः यह विवाद भी समय–समय पर उठता रहता है कि पत्रकारिता सेवा है या व्यवस्था? महात्मा गाँधी ने इस विषय में अपनी आत्मकथा में कहा है– ''समाचार पत्र सेवा भाव से चलाये जाने चाहिए।''

पश्चिमी समाज की भांति हमारे समाज में भी जीवन के विभिन्न सबंध व्यापारों में व्यवसायिकता का भाव घुसपैठ कर चुका है उदाहरणार्थ चिकित्सा भारतीय जीवन मूल्यों के संदर्भ में विशुद्ध 'सेवा–वृत्ति' को रूप में स्वीकृत की गई है। पत्रकारिता का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है व्यवसायिकता की भावना इस क्षेत्र में भी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आधुनिक विद्वान पत्रकारिता को एक व्यवसाय के रूप में स्वीकार करने लगे हैं, डॉ0 रामचन्द्र तिवारी के अनुसार ''समग्ररूपेण पत्रकारिता व्यवसाय है और राष्ट्रीय लोक चेतना को उद्दीप्त करने का सशक्त साधन है।''

वस्तुतः वर्तमान युग में प्रचलित 'बाजारीकरण' की व्यवस्था के चलते जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में 'अर्थ' (पूंजी) का हस्तक्षेप बढ़ा है, आर्थिक स्पर्धाओं के कारण विभिन्न सामाजिक मान्यताओं में अनेकायामी परिवर्तन आये हैं। अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए बाजार के नियमों विनियमों में ढालने के लिए प्रत्येक व्यक्ति तथा संस्था बाध्य है। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी यही हुआ है। विभिन्न प्रकाशन संस्थाओं की पारस्परिक स्पर्धा के कारण पत्रकारिता में व्यवसायिकता का समावेश हुआ जिसके फलस्वरूप पत्र को एक 'उत्पाद' मानने की प्रवृत्ति का प्रचलन धीरे–धीरे बढ़ता जा रहा है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

इस संबंध में 'जनसत्ता' के कार्यकारी सम्पादक 'श्री राहुल देव' सेवा और व्यवसायिकता के मध्य संतुलन की आवश्यकता पर बल देते हुए कहते हैं ''अब तक हम 'बाजार' शब्द से भड़कते रहे हैं। लाभ शब्द खराब लगता है। 'मार्केटिंग' और मैनेजमैंट' शब्द हमें हेय लगाता है। इस सोच से अब काम नहीं चलने वाला, क्योंकि हमारी आत्मा चाहे कितनी ही सशक्त क्यों न हो, बिना शरीर को मजबूत बनाये हम टिक नहीं सकते। शरीर को मजबूत बनाये रखने के लिए 'मार्केटिंग' और 'मैंनेजमैंट' की जरूरत है।

अतः यह कहना अनुचित होगा कि पत्रकारिता का पूर्ण रूप से व्यवसायीकरण हो चुका है अथवा हो रहा है। स्वयं पत्रकार–वर्ग द्वारा ही अति व्यवसायिकता के विरूद्ध शंखवाद किया जा रहा है। यह सही है कि पूंजी के इस क्षेत्र में अत्यधिक हस्तक्षेप के फलस्वरूप पत्रकार–वर्ग की शक्ति का ह्रास होना प्रांरभं हो गया है। अपने प्रसार क्षेत्र में सम्राट समझने वाले 'संपादक' नामक व्यक्ति के प्रभाव में भी पिछले वर्षों की तुलना में कमी आई है परन्तु स्थिति पर नियंत्रण की संभावनाएँ अभी शेष हैं। यही कारण है कि अब पत्रकारिता के गिरते स्तर को रोकने तथा पत्रकारिय सद्‌गुणों के पुनर्स्थापना की बात पत्रकारों द्वारा ही उठाई जाने लगी है। पत्रकारिता के क्षेत्र में भ्रष्टाचार, पक्षपात, सत्तासुख भोग आदि तत्वों को निकाल बाहर करने के प्रयास किये जाने लगे हैं।

राजनैतिक क्षेत्र से संबंधित पत्रकारिता कर्म को राजनैतिक पत्रकारिता कहा जा सकता है। अशोक द्वारा खुदवाये अभिलेख, 60 ई0पू0 में जूलियस सीज़र द्वारा प्रारंभ 'एकटा डायना' तथा अन्य समाचार पत्रों को राजनैतिक पत्रकारिता की संज्ञा प्रदान की जा सकती है। आधुनिक युग में राजनैतिक पत्रकारिता का विस्तृत रूप हमारे सामने है। राजनीति समाज का सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है। वर्तमान युग में प्रत्येक पत्रकारीय, संस्था राजनीतिक गतिविधियों एवं घटनाचक्रों को अपने प्रकाशन में आवश्यक रूप से स्थान देता है। राजनैतिक घटना व्यापारों के अन्वेषण, विश्लेषण आदि से संबंधित पत्रकारीय कर्म राजनीतिक पत्रकारिता की श्रेणी में आते हैं।

साहित्य सम्बन्धी पत्रकारीय कर्म साहित्यिक पत्रकारिता कहलाता है। जिसमें साहित्य के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ उसका मूल्यांकन भी सम्मिलित है। पाश्चात्य जगत के सुप्रसिद्ध कवि होमर अपने काव्यों को नगाड़े बजाकर लोगों को स्थान–स्थान पर एकत्रित करके सुनाया करते थे। भारत में सम्राट अशोक, गंग वंश, शुंगवंशीय, कलुचरि आदि अनेक वंशों के अभिलेखों में साहित्यिक सामग्री को खुदवाया गया था। इस दृष्टि से इन्हें साहित्यिक पत्रकारिता का प्रारंभिक काल स्वीकार

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

किया जा सकता है। आधुनिक युग में भी साहित्यिक पत्रकारिता विद्यमान है। प्रायः प्रत्येक पत्र–पत्रिका में साहित्यिक सामग्री को यथोचित स्थान एवं महत्व दिया जाता है।

खोजी पत्रकारिता का अर्थ है छिपायी जाने वाली सूचनाओं, तथ्यों और राजनीतिक कथाओं को बेपर्दा करना। जोखिम भरी ऐसी पत्रकारिता का विशेष महत्व इसलिए है क्योंकि सत्ता और शासन के विरूद्ध कुछ भी लिखना बहुत कठिन होता है। कभी–कभी तो ऐसी रिपोर्टों का ऐसा प्रभाव पड़ता है कि सत्ता तक में परिवर्तन आ जाता है। अमेरिका का 'वाटर गेट कांड' और भारत में 'बोफोर्स दलाली कांड' ऐसे ही कांड थे जिनकी वजह से दोनों जगहो पर सत्ता–परिवर्तन हुए। उसके बाद से तो यहाँ घोटालों की झड़ी लग गयी– हवाला, प्रतिभूति, यूटीआई, ताबूत, वर्दी, चारा, अलकतरा, पैट्रोल पंप जैसे कितने ही घोटाले हुए। इलैक्ट्रानिक मीडिया द्वारा बेपर्दा किया गया घोटाला 'तहलका' बहुत दिनों चर्चा में रहा। इन घोटालों से सत्ता में काबिज सरकारों की किरकिरी तो हुई ही, पत्रकारों को भी उनका खामियाज़ा भुगतना पड़ा है। ''खोजी पत्रकार की जिम्मेदारी इतनी अहम होती है कि यदि वह अफवाहो, काल्पनिक प्रसंगों और अप्रमाणिक तथ्यों के चक्कर में पड़ जाये तो खोजी पत्रकारिता फौरन 'पीत पत्रकारिता' में तब्दील हो सकती है और पत्रकारों की साख पर बट्टा लग सकता है।''

अर्थ का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। बिना अर्थ के जिन्दगी एक कदम आगे नहीं चल पाती, लेकिन आम आदमी यह नहीं जान पाता कि रूपया कहाँ से आता है, और कहाँ जाता है, मुद्रा क्यों लुढ़कती है, क्यों चढ़ती है? रुपए के मुकाबले डालर कितना मंहगा और सस्ता हुआ? पेट्रोल की कीमतें अंतर्राष्ट्रीय बाजार के उतार–चढ़ाव से कैसे चढ़ती उतरती है? गेहूँ के दाम क्यों उछले हैं, सरकारों के अस्थिर होने पर शेयर बाज़ार में अफरातफरी क्यों मच जाती है? ऐसे अनेक विषयों की चर्चा प्रायः सभी अखबारों में रोजाना होती है। ऐसे विषयों से सम्बन्ध रखने वाली पत्रकारिता आर्थिक पत्रकारिता है।

प्राचीनकाल से ही धर्म विश्व की सभी सभ्यताओं के जीवन का केन्द्र रहा है। जीवन के विभिन्न पक्षों रहन–सहन, लोक–परलोक, दर्शन, ईश्वर, जीव, संसार आदि की धर्म द्वारा विभिन्न प्रकार की व्याख्याएँ की गई हैं। अशोक ने अपने अभिलेखों में धार्मिक उपदेशों का प्रचार किया था। सन् 1456 के गुरू बर्ग ने बाइबिल की 42 पंक्तियों का मुद्रण किया। भारतीय भाषाओं में प्रकाशित दो पत्र 'दिग्दर्शन' तथा 'समाचार दर्पण' ईसाई मिशनरियों ने प्रकाशित किये जिनका उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार–प्रसार करना था। राजा राममोहन राय ने भी इसकी प्रतिक्रिया में 'ब्राहमैनिकल मैगजीन' का

प्रकाशन शुरू किया था वर्तमान युग में 'कल्याण' पत्रिका धार्मिक पत्रकारिता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण कही जा सकती है।

अपने आस–पास की घटनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता ने ही पत्रकारिता को जन्म दिया। समाज से संबंधित विभिन्न घटनाक्रमों का संकलन एवं प्रकाशन समाचार पत्रकारिता कहलाता है। 'समाचार प्रसारण प्रक्रिया' का पत्रकारिता के क्षेत्र में किस प्रकार विकास हुआ यह प्रस्तुत अध्याय में विवेचित किया जा चुका है। समाचार के संकलन तथा प्रकाशन से संबंधित विविध प्रकार के पत्रकारीय कर्म समाचार पत्रकारिता के कार्य क्षेत्र में आते हैं। अनेक दैनिक समाचार पत्रों द्वारा समाज में घटित होने वाली प्रतिदिन की घटनाओं का विवरण एवं विश्लेषण प्रकाशित किया जाता है।

अतः पत्रकारिता की अवधारणा को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है ''जनसूचना, जनसंपर्क तथा जनजागृति के विभिन्न साधनों के प्रयोग के कलात्मक विज्ञान तथा इनके प्रयोगकर्ताओं के विभिन्न कार्यों–कर्त्तव्यों को पत्रकारिता कहा जा सकता है।'' जनसंचार के विभिन्न माध्यम पत्रकारिता का शरीर और 'पत्रकार' इसे संचालित करने वाला नाड़ी तन्त्र तथा लोक कल्याण का भाव उसकी आत्मा है। अपने इस शरीर और आत्मा के माध्यम से पत्रकारिता समाज की अनेक प्रकार से सेवा करती है।

संदर्भ सूची–

1– सम्पूर्ण पत्रकारिता, डॉ0 अर्जुन तिवारी, 2014, पृ0 7
2– हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता, डॉ0 अवधेश कुमार, 2006, पृ0 15
3– प्रयोजनमूलक हिन्दी, नरेश मिश्रा, 1999, पृ0 4
4– हिन्दी पत्रकारिता, डॉ0 रत्नाकर पाण्डे, 1976, पृ0 255
5– गाँधी ने कहा था, डॉ0 गिरिराज शरण, 2009, पृ0 162
6– हिन्दी पत्रकारिता, विविध रूप, डॉ0 रामचन्द्र तिवारी, 2008, पृ0 59
7– खोजी पत्रकारिता, डॉ0 हरिमोहन एवं हरिशंकर जोशी, 2010, पृ0 25
8– हिन्दी पत्रकारिता, डॉ0 रत्नाकर पांडे, 1976, पृ0 255